नानाजी भारी मतों से विजयी हुए। उन्हें मंत्रीपद देने की बात हुई पर उन्होंने प्रस्ताव ठुकरा दिया। उनका मन राजनीति से दूर ग्रामों के विकास की ओर खिंचा जा रहा था। इस बीच उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की।